रामदरश मिश्र के उपन्यासों में लोक गीत

बबीता चौधरी
हिन्दी विभाग
एन0ए0एस0 कॉलिज,
मेरठ

रामदरश मिश्र उन उपन्यासकारों में है जिन्होंने ग्रामीण और आचंलिक परिवेश की यथार्थ संवेदनात्मक धड़कनों को पकड़ने का प्रयत्न किया है। रामदरश मिश्र की औपन्यासिक कला में राग संवेदन और सोच का जो घोल प्राप्त होता है वह उनकी संरचना को आकर्षक एवं कही–कही मर्मस्पर्शी भी बनाता है। वस्तुतः रामदरश मिश्र जी के उपन्यासों में लोक तत्व के सभी रूप समाहित है। उनमें लोक गीत भी है, लोक नृत्य भी है प्राकृतिक सुषमा भी है। प्रकृति के रम्य वातावरण में लोक जीवन अपनी समस्त संगति विसंगतियों को लेकर प्रस्तुत हुआ है। रामदरश मिश्र जी के उपन्यासों में जिन्दगी अपने सम्पूर्ण रूप में विद्यमान है। उनका राग मोह और उत्सव विलास एक अनोखी छटा देता है। इस प्रकार रामदरशमिश्र के उपन्यासों में गीतों का सौन्दर्य विविध रूपों में मुखरित हुआ है।

लोकगीत के सम्बन्ध में लोकसाहित्य के मर्मज्ञ विद्वान डॉ0 सत्येन्द्र से गद्गद् ने अपना मत व्यक्त करते हुए कहा है– ''जब लोक मानस आनन्द से गद्गद् को उठता है या वेदना का स्रोत प्रवाहित होने लगता है तो स्वतः प्रेरित भाव लहरिया लोक मानस से प्रवाहित होने लगता है तो स्वतः प्रेरित भाव लहरिया लोक मानस से प्रवाहित होने लगती है, ये ही भाव लहरिया लोकगीत नाम से अभिहित होती हैं। इनकी रचना का न तो कोई स्वरूप ही है न नियमावली। न ही लोकगीतों के मूल रचयिता का ही पता होता है।[1] लोकगीत व गीत हैं जिसकी एक लम्बी परम्परा बनी रहती है, जो लोक मानव के बीच गाये जाते हैं। इसकी अक्षण्ण परम्परा है, जो एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी के कण्ठानुकण्ठ में अलापती चली जाती है। अतः यह कभी भी निष्प्राण नहीं होती है।[2]

डॉ0 विद्या चौहान ने लोकगीत के सम्बन्ध में अपना विचार प्रस्तुत करते हुए कहा है– ''लोकगीत मानव हृदय की वह नैसर्गिक अभिव्यक्ति है, जिसमें भाव भाषा और छन्द की नियमितता से मुक्त रहकर स्वछन्द रूप से निःसृत होने लगते हैं। जीवन और जगत में व्याप्त स्थितियों एवं घटनाओं के घात–प्रतिघात से उत्पन्न अन्तर्भावनाओं की लयात्मक उद्गीर्णता लोकगीतों में प्राप्त होती है।''[3]

डॉ0 चिन्तामणि उपाध्याय का गत भी ध्यातव्य है– ''मानव हृदय में स्पंदित होने वाले विविध भाव ही लोकगीतों के प्रेरणादाता सिद्ध होते हैं। मनुष्य के अर्धचेतन में जीवन की छोटी–छोटी परिस्थितियाँ भावना की हल्की अभिव्यक्ति का स्पर्श पाकर कण्ठमाधुर्य से सिक्त होकर मुक्त हो उठती हैं तभी लोकगीतों का स्वरूप धारण कर लेती है।''[4]

डॉ0 तेजनारायणलाल के अनुसार– ''लोक गीत हमारे जीवन विकास के इतिहास है।''[5]

डॉ0 चन्द्रशेखर भट्ट के कथनानुसार ''लोकगीत सर्वसामान्य की बहुश्रुत परम्परा के स्वतः स्फूर्जित उद्गार है।'' तथा ''लोकगीत कवि की

परोक्षानुभूतिपरक दृष्टिकोण से सहज रूप से उद्भूत संगीतात्मक शब्द–योजना को कहा जा सकता है।''[6]

अमृता प्रीतम ने लोकगीत का पुष्टि करते हुए कहा है– ''लोकगीतों का पवित्र मोती चाहे सागर की अतुल गहराइयों में पड़ा रहे, किन्तु जब भी उसे निकालो वह पूर्व अवस्था के समान ही पवित्र तथा आभायुक्त होता है।''[7]

लोकगीत के सम्बन्ध में पंडित रामनरेश त्रिपाठी का गत भी ध्यातव्य है– ''गीता तो प्रकृति का वह उद्यान है जो जंगलों में, पहाड़ों पर, नदी तटों पर स्वतन्त्र रूप से विकसित हुआ है। वह अकृत्रिम है। सिद्ध कवियों की कविता किसी बगले का फूल है जिसका सर्वस्व माली है पर ग्राम गीत वह फूल है झरने जिसको पानी पिलाते है, मेघ जिसे नहलाते है, सूर्य जिसकी आंखे खोलता है, मन्द–मन्द समीर जिसे झूले में झुलाता है, चन्द्रमा जिसका मुंह चूमता है और ओस जिस पर गुलाब जल छिड़कती है। उसकी समता बंगले का कैदी फूल नहीं कर सकता।[8]

लोक साहित्य के अन्तर्गत लोक गीतों का स्थान महत्वपूर्ण है लोक गीत मानव मन की आदिम गानवृत्ति के प्रतीक होते है इनमें चिरपरिचित विषयों और सहज अनुभूतियों की तथा व्यक्तिगत सुख–दुख और समष्टिगत हर्ष विषाद की अनूठी अभिव्यक्तियाँ होती है। डॉ0 रवीन्द्र भ्रमर ने लोक गीत के विषय में उचित ही लिखा है ''लोक जीवन लोक मानव के व्यक्तिगत और सामूहिक सुख–दुख की लयात्मक अभिव्यक्ति होते है। लोक कथा की भांति ये भी लोक कण्ठ को मौखिक परम्परा की धरोहर और लोक मानस की विविध चिंता धाराओं के कोण माने गये है।''[9]

लोक गीतों के सम्बन्ध में भगीरथ मिश्र लिखते है ''किसी भी जाति के लोक गीत उनकी संस्कृति की धरोहर है वैदिककाल से आज तक के लोक गीतों में हमारी जाति और हमारे समाज का स्वभाव स्पष्ट है यह वह स्वभाव है कि जिसके बनाने में किसी ने किसी प्रयत्न नहीं किया यह वह भावना है जो प्राकृतिक जीवन के साथ हमारे अंतर्गत प्रवेश कर गयी है यह वह संस्कृति है जिसका शिक्षा से कोई सम्बन्ध नहीं फिर भी लोक–गीतों में प्राप्त संस्कृति के द्वारा हमारा जातीय बल–वैभव आकांक्षायें लालसायें हृदय की उदारता और करूणा, अत्याचार पर असंतोषादि भावना, प्रकृति के साथ जीवन का लगाव, पशु पक्षियों से प्रेम, पारस्परिक पारिवारिक और सामाजिक व्यवहार आदि भली भांति स्पष्ट होते है।[10]

लोक गीतों का संबंध प्राय किसी घटना या विशिष्ट अवसर से जुड़ा होता है
पारिवारिक परिधि में ये गीत विभिन्न प्रकार के संस्कारों पर्वोत्सवों तथा धार्मिक
अनुष्ठानों पर गाये जाते हैं। ये गीत वर्ष में विभिन्न ऋतुओं उत्सवों फसल की
कटाई, बुवाई, विभिन्न खेल तमाशों मेलों के अवसर पर व्यक्तिगत व सामूहिक रूप
से गाये जाते है मिश्र जी के उपन्यासों में पानी के प्राचीर, जल टूटता हुआ, सूखता हुआ तालाब, अपने लोग, बिना दरवाजे का मकान, दूसरा घर, थकी हुई सुबह, बीस बरस आदि उपन्यासों में लोक गीतों की छटा दृष्टव्य है।

मिश्र जी के आंचलिक उपन्यास 'पानी के प्राचीर' में ग्रामीण महिलाएं खेतों में हाथ से कम करते हुए गीतों से काम की थकान उतारते हुए गाती हैं–

''रामा नाहीं पिया अइले फुहार में
आरे सावंलिया
सब सखियां मिल झूला झूले
हम बैठी अपने ओसार में

आरे सावंलिया।

रोई रोई काटहु बैरी बरखा

तोर पिया अइहें कुवार में

आरे सावंलिया।''[11]

'पानी क प्राचीर' उपन्यास में आषाढ मास में ही चमेली अपने ओसोरे में गा रही है–

''हरी हरी अंचला भीजंत जाय
बदखा बरसे ए हरी''[12]

चमेली को गाता देखकर दूसरी लड़कियाँ जुटने लगती है। चमेली नीम की डाली पर अन्य झूला झूलती हुई लड़कियों के साथ गाती है–

''बदरवा बरसे ए हरी
धक धक धधके गोरी बिजुरिया
झक झक झहरे बैरी बयारिया
आरे रामा सैंया रहे कहां छाप
बदरवा बरसे ए हरी।''[13]

साथ ही उसकी सखी मैना भी गाती है–

''मोरवा बोले बोले पपैया
डगमग डोले मन की नइया
आरे रामा जिनगी बीतल जाप
बदरवा बरसे ए हरी
ए हरी ए हरी ए हरी
ह ह हः हिः हिः हिः[14]

मिश्र जी के उपन्यासों में ऋतु (विशेष वर्षा) प्रेम मानव के विविध संस्कार एवं मनः स्थिति संबंधी गीत पाये जाते हैं। पानी के प्राचीर में वर्षा ऋतु प्रारंभ होने पर भी जब बहुत दिनों तक बारिश नहीं होती तब वर्षा का आह्वान किया जाता है। उपन्यास में बारिश के लिए छोटे–छोटे लड़कों का झुण्ड हल्ला करता हुआ मेघ से प्राथ्रना करते हुए गाता है–

काच कचौरी पीपर धोती मेघा सारे पानी दे[15]

ग्रामीणों में विश्वास है कि काच कचौरी खेलने से पानी बरसता है लेकिन हाय पानी की एक बूँद पड़ना तो दूर बादल का एक टुकड़ा भी दिखाई नहीं देता।

उपन्यास में पाडेपुरवा गाँव की औरतों का झुण्ड रात में गांव के बाहर नग्न होकर हल चलाता है और बरखा को पुकारता है।

बरखू ए बरखू
कहवां तू जा के लुकइलड ए बरखू।
बसवां की कोठिया लुकइलड ए बरखू।''[16]

हल जोतते समय लड़कियां व बहुएं हास परिहास से नहीं चूकतीं। दा दल बन जाते है, एक भाभियों का दूसरा लड़कियों का। तब दोनों दलों में गलियों का शास्त्रार्थ शुरू होता है गांव की लड़कियां कमर में हाथ डालकर नाचने लगीं और तालियों से ताल देते हुए नाच–नाचकर बरसात को पुकार रही हैं–

चट्ट चट्ट चट्ट चट्ट
चट्ट चट्ट चट्ट चट्ट
कि आरे गोरी
कि आरे गोरी
गोरिया तोरे गाल पर मासा
एक दिन चली गड़ासा ना?[17]

हंसी का फव्वारा छूट पड़ा, किन्तु आकाश में न बादल ही आया और न धरती का इंतजार ही खत्म हुआ। इस प्रकार धार्मिक एवं सामाजिक उत्सव की थोड़ी भी आड़ मिलते ही ग्रामवासियों के हृदयगत भाव फूट निकलते है।

वर्षा होने पर ज्योंही बीजों में अंकुर निकलने लगते है, सारी धरती रोमांचित

हो उठती है। पेड़ों पर झूले पड जाते है कजली व वर्षा ऋतु की मस्ती भरी धुनो से सारा वातावरण ध्वनित हो उठता है 'पानी के प्राचीर', उपन्यास के पाडेपुरवा गाँव में ज्योहीं चिरप्रतीक्षित वर्षा हुई अमराई में, बरगद पर या नीम की डाली पर सब जगह झूले पड़ जाते हैं। गांव बालाओं के गले से गीत फूट निकलते है। लम्ब लम्बे पेंगों के साथ कजली की धुन ऊँचे–नीचे लहराने लगी–

हरि हरि पिया गये परदेस
खबर ना लीनी ए हरी।''[18]

मौसम की रंगीनी के साथ बिछोह की तड़प भी बढ़ गई और जैसे वहीं बिछोह गीतों में दर्द बनकर सिहर रहा है–

एक बेर अवतडबालू फेरी चलि जाइत आरे रामा
धइले चुनरिया मुरझाले ए हरी।''[19]

इसी प्रकार 'जल टूटता हुआ', उपन्यास में बरसते पानी में खेतों में काम करती मजूरिने अपनी थकान दूर करने के लिए कजली गा रही है–

दइया बड़ा कड़ा जल बरसे
कइसे जइबड़ बिदेसवा ना।''[20]

'जल टूटता हुआ' उपन्यास में वर्षा ऋतु में गीता गाती है–
हरि हरि पवन बहे पुरवइया नदिया डोले ए हरी!
जुलमी बदरा घिरि घिरि आवे
पापी तड़पि तड़पि डरपावे
हरि हरि पिया पिया पपिहरवा
बनवां बोले ए हरी![21]

गीता के दर्दीले स्वर बाप के हृदय में दूसरी ही तडपन उत्पन्न कर रहे है गीता अब सत्रह की हो गयी है वह भी तो अब नदी ही है न गीता के गीत ने मानो उसके अंतर की मौन नदी ही पुरवइया के झोंको से हरहरा उठी हो। उधर से कूजूं राग अलापता हुआ आ रहा है जो बरसात में भीगकर और करूण हो रहा है–

नदिया बीच मीन पियासी रे
मोंहि सुन सुन आवे हांसी।''[22]

वर्ष ऋतु में जब काले काले बादल उमड़–घुमड कर छाने लगते है तब प्रकृति की गोद के निवासी स्त्री–पुरूषों के अंतर्भाव कजली के रूप में निःसृत होते है 'सूखता हुआ तालाब', में ऐसे मनभावन मौसम में धान के खेतों में काम करती चेनइया, जिसका मरद कलकत्ता में नौकरी करता है अपनी सखियों के आग्रह पर इस प्रकार गा उठती है–

रिमझिम रिमझिम बरसे पनिया
मोर अगिनिया ना सेराय
आरे रामा जुलम करे असरेसवा
सइयां छवले कौने देसवां।[23]

प्रकृति के उन्मुक्त वातावरण में प्रत्येक ऋतु ग्रामवासियों के लिए एक नया ही जीवन संदेश लेकर आती है रामदरश मिश्र जी के उपन्यासों में वर्षा ऋतु के अतिरिक्त फागुन चैत मास से संबंधित गीत भी गाये जाते है। ''पानी के प्राचीर'' में गोरखपुर के पांडेपुरवा गाँव में फागुन की मस्त वातावरण में नगाडे पर चौताल की कड़िया उडती है–

डिडी डिम्मक डिडी डिम्मक
जल भरि जमुना जी के तीर निहारति बाला
डिडी डिम्मक डिडी डिम्मक
झिंझी झम्मक झिंझी झम्मक
जल भरि जमुना जी के तीर निहारति बाला
डिडी डिम्मक डिडी डिम्मक

झम्मक झम्मक झम्मक झम्मक[24]

फागुन के आने से खेतों में हरियाली छा जाती है प्रकृति में रौनक आ जाती है और प्रत्येक व्यक्ति इस वातावरण से सम्मोहित हो जाता है। मिश्र जी के उपन्यास 'अपने लोग' में फागुन महीने से सम्बन्धित एक गीत गाड़ीवान के मस्ती भरे स्वर में देखिए–

फागुन मस्त महीनवा क होरी
अब कइसे जोबना छिपइबू ए गोरी[25]

वही 'दूसरा घर' उपन्यास मे पिया के आने का इंतजार बताया गया है–

गौरी बैठि उचारे सगुनवां
पिया कब अइहे भवनवां''[26]

'बिना दरवाजे का मकान' उपन्यास में भी फागुन की एक शाम को दीपा स्कूल से लौटते समय गीत गा रही है–

मेरी ऊँची अटरिया पे कागा बोले
मेरा जीया डोले
कोई आ रहा है
कोई आ रहा है[27]

इसी प्रकार 'थकी हुई सुबह' उपन्यास में भी फागुन महीने में साजन के इंतजार का गीत कोई देहाती गा रहा है–

आइ गइल जुलमी महिनवा
घरे नाहीं अइले सजनवां
देहिया भइलिवा फगुनवां
घरे नहीं अइलें सजनवा[28]

फाग की मस्ती उतरी नहीं कि चैत की मादक गंध प्राणों से फूट पड़ती है इस समय समस्त पेड व लताएं पल्लवित पुष्पित होते हैं वासंती हवा की झरझराहट में पपीहा 'पी कहाँ' की रट आरंभ कर देता है तो विरहिणीयों का विरह उद्दीप्त होता है। उनके मुख से दर्द भरे छंद फूट पड़ते है–

आ गइलें चैत महीनवा हो रामा
कि सइयां नाही अइलें।[29]

'थकी हुई सुबह' उपन्यास मं` भी चैत महीने से संबंधित गीत पाया जाता है–

फुलवन से वन दहके हो रामा
चैत महिनवा
घर, आंगन, मन महके हो रामा
चैत महिनवा
अगिया लगावे ले बैरिन कोइलिया
बोले कहीं रह रह के हो रामा
चैत महिनवा
डंसि–डंसि जाले बेदर्दी बयरिया
खाइ लहर जिया बहके हो रामा
चैत महिनवा।''[30]

भारतीय संस्कृति के अनुसार प्रायः सभी जाति धर्म एवं वर्ग के लोगों के जीवन में विवाह का अत्यधिक महत्व होने के कारण यह एक उत्सव के रूप में बड़ी धूमधाम से सम्पन्न होता है। विवाह से कुछ दिवस पूर्व एवं पश्चात् ऐसे अनेक अवसर आते है जबकि महिलाएँ लोग गीत गाती है। परम्परा यह रही है कि इस अवसर पर वधू की विदाई का गीत गाया जाता है उत्तर प्रदेश के कछार अंचल की पृष्ठभूमि पर विरचित 'पानी के प्राचीर' उपन्यास में कन्या के पिता के घर से बिदा होकर सुसराल जाते समय कन्या के परिवार वालों के मनोभावों को निम्नवत् लोकगीत में प्रस्तुत किया गया है–

बाबा जे रोवेलें जूनी जूनी
जब नहाये के जुनिया

घर में क बेटी कहां गइलू हो
देतु धोतिया से डोरिया
मइला जे रोवेली जूनी जूनी[31]

मांगलिक अवसर पर गाये गये गीतों के अतिरिक्त 'पानी के प्राचीर' में अशुभ अवसर पर गाया गया गीत भी मिलता है जब शामधारी की मृत्यु होती है तब उसकी नवागत पत्नी (गुलाबी) सारी लोक लाज भूलकर घर से दौड़ी हुई आयी और वह पति की लाश पर गिरकर कारण कर कर रोने लगी–

आरे ए मोर रजवा
रजवा हमके बिसारि
कहवां गइले रे रजवा
चारों ओरियां चितई ले
तुहके रे रजवा
कहूँ नाही तोके
देखत बाटीं रे रजवा।[32]

गुलाबी की यह दर्दनाक चीख चैत की फूली–फूली रात को दूर तक चीरती रही। उधर पानी के प्राचीर में मल्लाह उस पार अपनी झोपड़ी में आग सुलगाये गा रहा है–

उडि जा हंसा अमरलोक के
इहां केहू ना तुहार।[33]

'अपने लोग उपन्यास में माधवी एम0ए0 की विदाई के दिन सितार पर एक दर्दनाक गीत गाती है–

कांप रहा दर्द से सितार है
तार झनझना के तुम चले गये।[34]

मिश्र जी के उपन्यासों विदेसिया संबंधी गीत भी गांवों के हर आदमी के कंठ का दर्द बनकर उभरते है। क्योंकि पढ़े–बेपढ़े सभी ग्रामीणों की भूखी प्यासी जिदंगी उन्हें नौकरी की तलाश में विदेश की ओर ढकेलती है उदाहरण के लिए 'जल टूटता हुआ' में गोरखपुर के राप्ती नदी के कछार अंचल में निवास करने वाले व्यक्तियों के लिए 'विदेश' का अर्थ है– बंगाल जिसके बारे में प्रसिद्ध है कि वहां चटकल है, जादू है, बीमारी है और वहाँ का पानी खराब है–

''हाथ गोड़ फूलि जइहे, पेटवा निकरि जइहे,
बंगला का पानी है खराब रे बिदेसिया।[35]

'विदेसिया' गीत में प्रिया आंखों में आंसू भरकर व्यथित स्वर से आग्रह करती हैं कि है प्रियतम पूरब दश मत जाओं क्योंकि मुझे अन्न धन नहीं चाहिए मैं थोड़े में ही गुजारा कर लूंगी। कुँजू एक तान लहरा रहा है–

सेर भरी गोहुवा बरसि पीसि खेइबो
पियऊ जाये ना देबों हो .....
तोहका पूरूबी बनिजिया, पियऊ जाये ना
देबों हो.....[36]

इस जाने देन में पति को खोने का डर है कि कहीं कोई सौतिन लूट न ले किन्तु गरीबी के कारण अहकती आँखों से मौन बिदा देनी पड़ती है।

मिश्र जी के उपन्यासों में ऋतु, विवाह संबंधी गीतों के अतिरिक्त वियोगावस्था के गीत भी मिलते है 'जल टूटता हुआ' उपन्यास में कुंजू वियोगावस्था का गीत आता है–

दिनवां कटेला तोर रहिया जोइत सइयां
रतिया कटेले रोई रोई रे बिदेसिया
गउवां नगरिया सब भइले दुसमनवां से
तोरे बिना हमरा के होई रे बिदेसिया।[37]

इस प्रकार जल टूटता हुआ उपन्यास में कुंजू माघ की शाम में बगीचे की झोपड़ी में आधा लेटा हुआ वियोग का गीत आ रहा है–

बटिया जोहत जोहत जिनगी सेराइल
हेराइल नयनवा क जोतिया हो राम

जहाँ–जहाँ चितई ले, रोवे सुनसुनवा रे
थर थर कांपे ले पिरीतिया हा राम
थर थर कॉपे ले .....
थर थर .....[38]

'बीस बरस' उपन्यास में भी वियोगावस्था का गीत उपलब्ध होता है। जब दामोदर भाई दिल्ली जाने वाले होते हैं तब अंगद भाई उनसे मिलने उनके घर आते है। अगद भाई की वाणी में आर्द्रता थी, जुदा होने का दुख था। अतः वे बड़े दुख के साथ गाते हैं–

पत्ता टूटा डाल से ले गयी पवन उड़ाय
अब के बिछड़े कब मिलें, दूर पडे है
जाए।''[39]

उपन्यास 'जल टूटता हुआ' में विरह जन्य गीतों के अतिरिक्त चुनाव–प्रचार संबंधी गीतों की अन्विति बड़े कौशल एवं कलात्मक ढंग से हुइ है मिश्र जी के इस उपन्यास में कुंजू द्वारा विभिन्न स्वरों में गाया जाता है। गाँव में पंचायत के चुनाव के अवसर पर वह अपनी वंशी से युगानुरूप राग भी अलापता है, जिससे लोगों को वास्तविकता का परिचय कराता है ताकि दीनदयाल महीपसिंह जैसे अवसरवादियों के चेहरों का यथार्थ अनिज्ञति न रह जाय भाटपार के बाजार में वह लोगों के समूहों के बीच गाता है–

कि अइहो लोगवा
रोवे ले जिनिगिया
जुलमवां की छइया, कि अइहो लोगवा
कापें ले नियाउ
और धरमवा की गइया कि अइहो लोगवा
पान खाके, छुरिया छिपा के बेइमनवां
हसें ला कसइया कि अइहो लोगवा।[40]

ग्रामीण जनता सामयिक घटनाओं के संदर्भ में नवीन लोक गीतों का निर्माण करती रहती है स्वतन्त्रता प्राप्ति के समय स्वतन्त्रता प्राप्ति से संबंधित अनेक लोक गीतों का निर्माण हुआ। 'जल टूटता हुआ' उपन्यास में 15 अगस्त के दिन भाटपार के प्राइमरी स्कूल के छात्र बाबू महीपसिंह के आने पर स्वागत गीत आ रहे हैं–

स्वागत है, है लाल भारत के ...
छोड़ दिया सारा सुख अपना
तोड़ दिया फूलों का सपना
है मुसकाते भाल, भारत के''[41]

इस प्रकार मिश्र जी के उपन्यासों में ऋतु गीत, प्रेम गीत, विरह–गीत, विवाह गीत, विदाई गीत, बिदेसियागीत, चुनाव सम्बन्धी गीत राष्ट्रीयगीत, स्वागतगीत कजली और वैयक्तिक सुख–दुखात्मक गीत आदि सभी प्रकार के गीतों की अन्विति बड़े ही कौशल एवं कलात्मक धरातल पर प्रस्तुत हुई है।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

आधार ग्रन्थ–

- रवीन्द्र भ्रमर : हिन्दी भक्ति साहित्य में लोक तत्व
- डॉ0 सत्येन्द्र : लोकवार्ता की पगडण्डियाँ
- डॉ0 नृपेन्द्र प्रसाद वर्मा : पद्मावत का लोकतात्विक अध्ययन
- डॉ0 विद्या चौहान : लोक साहित्य

- डॉ0 चिन्तामणि उपध्याय : मालवी लोकगीत एक विवेचनात्मक अध्ययन
- डॉ0 चिन्तामणि उपाध्याय : लोकायन
- शान्ति अवस्थी : हिन्दी साहित्य सम्मेलन पत्रिका, लोक संस्कृति अंक सं0
- 2010
- अमृता प्रीतम : कांगडा के लोकगीत, भूमिका से
- पंडित रामनरेश त्रिपाठी : हमारा ग्राम साहित्य
- भागीरथ मिश्र : अध्ययन

मूल ग्रन्थ–

- पानी के प्राचीर
- जल टूटता हुआ
- सूखता हुआ तालाब
- अपने लोग
- दूसरा घर
- बिना दरवाजे का मकान
- थकी हुई सुबह
- बीस बरस

Copyright © 2017 *Babita Chaudhry*. This is an open access refereed article distributed under the Creative Common Attribution License which permits unrestricted use, distribution and reproduction in any medium, provided the original work is properly cited.

[1] डॉ0 सत्येन्द्र– लोकवार्ता की पगडण्डिया, पृ0 160

[2] डॉ0 नृपेन्द्र प्रसाद वर्मा– पद्मावत का लोकतात्विक अध्ययन, पृ0 205

[3] डॉ0 विद्या चौहान– लोक साहित्य, पृ0 45

[4] डॉ0 चिन्तामणि उपाध्याय– लोकायन, पृ0 16

[5] डॉ0 तेजनारायण– मैथिली लोक गीतों का अध्ययन, पृ0 16

[6] डॉ0 चन्द्रशेखर भट्ट – हाड़ौती लोकगीत, पृ0 30
[7] अमृता प्रीतम– कांगडा के लोकगीत, भूमि से
[8] पंडित रामनरेश त्रिपाठी– हमारा ग्राम साहित्य, पृ0 32–33 प्रथम संस्करण
[9] रवीन्द्र भ्रमर : हिन्दी भक्ति साहित्य में लोक तत्व, पृ0 6
[10] भगीरथ मिश्र : अध्ययन, पृ0 118
[11] रामदरश मिश्र : पानी के प्राचीर, पृ0 133

[12] रामदरश मिश्र : पानी के प्राचीर, पृ0 214

[13] रामदरश मिश्र : पानी के प्राचीर, पृ0 215

[14] रामदरश मिश्र : पानी के प्राचीर, पृ0 215

[15] रामदरश मिश्र : पानी के प्राचीर, पृ0 115

[16] रामदरश मिश्र : पानी के प्राचीर, पृ0 116
[17] रामदरश मिश्र : पानी के प्राचीर, पृ0 116

[18] रामदरश मिश्र : पानी के प्राचीर, पृ0 132

[19] रामदरश मिश्र : पानी के प्राचीर, पृ0 133

[20] रामदरश मिश्र : जल टूटता हुआ, पृ0 431

[21] रामदरश मिश्र : जल टूटता हुआ, पृ0 12

[22] रामदरश मिश्र : जल टूटता हुआ, पृ0 430
[23] रामदरश मिश्र : सूखता हुआ तालाब, पृ0 24

[24] रामदरश मिश्र : पानी के प्राचीर, पृ0 1
[25] रामदरश मिश्र : अपने लोग, पृ0 170

[26] रामदरश मिश्र : दूसरा घर, पृ0 208
[27] रामदरश मिश्र : बिना दरवाजे का मकान, पृ0 60

[28] रामदरश मिश्र : थकी हुई सुबह, पृ0 29

[29] रामदरश मिश्र : पानी के प्राचीर, पृ0 22

[30] रामदरश मिश्र : थकी हुई सुबह, पृ0 39
[31] रामदरश मिश्र : पानी के प्राचीर, पृ0 251

[32] रामदरश मिश्र : पानी के प्राचीर, पृ0 185

[33] रामदरश मिश्र : पानी के प्राचीर, पृ0 148

[34] रामदरश मिश्र : अपने लोग, पृ0 225

[35] रामदरश मिश्र : जल टूटता हुआ, पृ0 102
[36] रामदरश मिश्र : जल टूटता हुआ, पृ0 103

[37] रामदरश मिश्र : जल टूटता हुआ, पृ0 124
[38] रामदरश मिश्र : जल टूटता हुआ, पृ0 267

[39] रामदरश मिश्र : बीस बरस, पृ0 121

[40] रामदरश मिश्र : जल टूटता हुआ, पृ0 308

[41] रामदरश मिश्र : जल टूटता हुआ, पृ0 7